

Visit

Dwarkadheeshvastu.com

For

FREE Vastu Consultancy, Music, Epics, Devotional Videos
Educational Books, Educational Videos, Wallpapers

————— **** —————

All Music is also available in **CD** format. **CD Cover** can also be print with your Firm Name

————— **** —————

We also provide this whole Music and Data in **PENDRIVE** and **EXTERNAL HARD DISK**.

Contact : Ankit Mishra (+91-8010381364, dwarkadheeshvastu@gmail.com)

Saptvar-Vrat-Katha

(HINDI)

❖❖❖ रविवार (इतवार) व्रत कथा ❖❖❖

एक बुढ़िया थी। उसका नियम था प्रति रविवार को सवेरे ही स्नान आदि कर घर को गोबर से लीपकर फिर भोजन तैयार कर भगवान् को भोग लगा स्वयं भोजन करती थी। ऐसा व्रत करने से उसका घर अनेक प्रकार धन धान्य से पूर्ण था। श्री हरि की कृपा से घर में किसी प्रकार का विघ्न या दुःख नहीं था। सब प्रकार से घर में आनन्द रहता था। इस तरह कुछ दिन बीत जाने पर उसकी एक पड़ोसन जिसकी गौ का गोबर वह बुढ़िया लाया करती थी। विचार करने लगी कि यह वृद्धा सर्वदा मेरी गौ का गोबर ले जाती है। इसलिये अपनी गौ को घर के भीतर बांधने लग गई। बुढ़िया को गोबर न मिलने से रविवार के दिन अपने घर को न लीप सकी। इसलिए उसने न तो भोजन बनाया न भगवान् को भोग लगाया तथा स्वयं भी उसने भोजन नहीं किया। इस प्रकार उसने निराहार व्रत किया। रात्रि हो गई और वह भूखी सो गई। रात्रि में भगवान् ने उसे स्वप्न दिया और भोजन न

बनाने तथा लगाने का कारण पूछा। वृद्धा ने गोबर न मिलने का कारण सुनाया तब भगवान् ने कहा कि माता हम तुमको ऐसी गौ देते हैं जिससे सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं क्योंकि तुम हमेशा रविवार को गौ के गोबर से लीपकर भोजन बनाकर मेरा भोग लगाकर खुद भोजन करती हो। इससे मैं खुश होकर तुमको वरदान देता हूँ। निर्धन को धन और बाँझ स्त्रियों को पुत्र देकर दुःखों को दूर करता हूँ तथा अन्त समय में मोक्ष देता हूँ। स्वप्न में ऐसा वरदान देकर भगवान् तो अन्तर्धान हो गए और वृद्धा की आँख खुली तो वह देखती है कि आंगन में एक अति सुन्दर गौ और बछड़ा बँधे हुए हैं। वह गाय और बछड़े को देखकर अतीव प्रसन्न हुई और उसको घर के बाहर बांध दिया और वहीं खाने को चारा डाल दिया। जब उसकी पड़ोसन बुढ़िया ने घर के बाहर एक अति सुन्दर गौ और बछड़े को देखा तो द्वेष के कारण उसका हृदय जल उठा। उसने देखा कि गाय ने सोने का गोबर किया है तो वह उस गाय का गोबर ले गई और अपनी गाय का गोबर उसकी जगह पर रख गई। वह नित्यप्रति ऐसा ही करती रही और सीधी-साधी बुढ़िया को इसकी खबर

नहीं होने दी तब सर्वव्यापी ईश्वर ने सोचा कि चालाक पड़ोसन के कर्म से बुढ़िया ठगी जा रही है तो ईश्वर ने संध्या के समय अपनी माया से बड़े जोर की आँधी चला दी। बुढ़िया ने अन्धेरी के भय से अपनी गौ को भीतर बांध लिया। प्रातः काल जब वृद्धा ने देखा कि गौ ने सोने का गोबर दिया है तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही और वह प्रतिदिन गऊ को घर के भीतर बांधने लगी। उधर पड़ोसन ने देखा कि बुढ़िया गऊ को घर के भीतर बांधने लगी है और उसका सोने का गोबर उठाने का दाँव नहीं चलता तो वह ईर्ष्या और डाह से जल उठी और कुछ उपाय न देख पड़ोसन ने उस देश के राजा की सभा में जाकर कहा महाराज मेरे पड़ोस में एक वृद्धा के पास ऐसी गऊ है जो आप जैसे राजाओं के ही योग्य है, वह नित्य सोने का गोबर देती है। आप उस सोने से प्रजा का पालन करिये। वह वृद्धा इतने सोने का क्या करेगी। राजा ने यह बात सुन अपने दूतों को वृद्धा के घर से गऊ लाने की आज्ञा दी। वृद्धा प्रातः ईश्वर का भोग लगा भोजन ग्रहण करने ही जा रही थी कि राजा के कर्मचारी गऊ खोलकर ले गये। वृद्धा काफी रोई-चिल्लाई किन्तु

कर्मचारियों के समक्ष कोई क्या कहता? उस दिन वृद्धा गऊ के वियोग में भोजन न खा सकी और रात भर रो-रो ईश्वर से गऊ को पुनः पाने के लिए प्रार्थना करती रही। उधर राजा गऊ को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ लेकिन सुबह जैसे ही वह उठा, सारा महल गोबर से भरा दिखाई देने लगा। राजा यह देख घबरा गया। भगवान् ने रात्रि में राजा को स्वप्न में कहा कि हे राजा! गाय वृद्धा को लौटाने में ही तेरा भला है। उसके रविवार के व्रत से प्रसन्न होकर मैंने उसे गाय दी थी। प्रातः होते ही राजा ने वृद्धा को बुलाकर बहुत से धन के साथ सम्मान सहित गऊ बछड़ा लौटा दिया। उसकी पड़ोसिन दुष्ट बुढ़िया को बुलाकर उचित दण्ड दिया। इतना करने के बाद राजा के महल से गन्दगी दूर हुई। उसी दिन से राजा ने नगरवासियों को आदेश दिया कि राज्य की तथा अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये रविवार का व्रत कर्तव्य है। व्रत करने से नगर के लोग सुखी जीवन व्यतीत करने लगे। कोई भी बीमारी तथा प्रकृति का प्रकोप उस नगर पर नहीं होता था। सारी प्रजा सुख से रहने लगी।

सोमवार व्रत की विधि

सोमवार का व्रत साधारणतया दिन के तीसरे पहर तक होता है। व्रत में फलाहार या पारण का कोई खास नियम नहीं है किन्तु यह आवश्यक है कि दिन रात में केवल एक समय भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिवजी पार्वती का पूजन करना चाहिए। सोमवार के व्रत तीन प्रकार के हैं — साधारण प्रति सोमवार, सौम्य प्रदोष और सोलह सोमवार विधि तीनों की एक जैसी है। शिव पूजन के पश्चात् कथा सुननी चाहिए। प्रदोष व्रत सोलह सोमवार कथा तीनों की अलग-अलग हैं जो आगे लिखी गई हैं।

सोमवार व्रत कथा

एक बहुत धनवान साहूकार था, जिसके घर धन आदि किसी प्रकार की कमी नहीं थी। परन्तु उसको एक दुःख था कि उसके कोई पुत्र नहीं था। वह इसी चिन्ता में रात-दिन रहता था। वह पुत्र की कामना के लिए प्रति सोमवार को शिवजी का व्रत और पूजन किया

करता था तथा सायंकाल को शिव मन्दिर में जाकर शिवजी के श्री विग्रह के सामने दीपक जलाया करता था। उसके इस भक्तिभाव को देखकर एक समय श्री पार्वतीजी ने शिवजी महाराज से कहा कि महाराज, यह साहूकार आप का अनन्य भक्त है और सदैव आपका व्रत और पूजन बड़ी श्रद्धा से करता है। इसकी मनोकामना पूर्ण करनी चाहिए।

शिवजी ने कहा "हे पार्वती! यह संसार कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल काटता है। उसी तरह इस संसार में जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल भोगते हैं।" पार्वती जी ने अत्यंत आग्रह से कहा— "महाराज! जब यह आपका अनन्य भक्त है और इसको अगर किसी प्रकार का दुःख है तो उसको अवश्य दूर करना चाहिए क्योंकि आप सदैव अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दुःखों को दूर करते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपकी सेवा तथा व्रत क्यों करेंगे।"

पार्वती जी का ऐसा आग्रह देख शिवजी महाराज कहने लगे— "हे पार्वती! इसके कोई पुत्र नहीं है इसी चिन्ता में यह अति दुःखी रहता है। इसके भाग्य में पुत्र न होने पर भी मैं इसको

घर की ओर चल पड़े। रास्ते में वे उसी शहर में आए जहां उसका विवाह हुआ था। वहां पर आकर उन्होंने यज्ञ आरंभ कर दिया तो उस लड़के के ससुर ने उसको पहचान लिया और अपने महल में ले जाकर उसकी बड़ी खातिर की साथ ही बहुत दास-दासियों सहित आदर पूर्वक लड़की और जमाई को विदा किया। जब वे अपने शहर के निकट आए तो मामा ने कहा मैं पहले तुम्हारे घर जाकर खबर कर आता हूँ। जब उस लड़के का मामा घर पहुंचा तो लड़के के माता-पिता घर की छत पर बैठे थे और यह प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सकुशल लौट आया तो हम राजी-खुशी नीचे आ जायेगे नहीं तो छत से गिरकर अपने प्राण खो देंगे। इतने में उस लड़के के मामा ने आकर यह समाचार दिया कि आपका पुत्र आ गया है तो उनको विश्वास नहीं आया तब उसके मामा ने शपथ पूर्वक कहा कि आपका पुत्र अपनी स्त्री के साथ बहुत सारा धन लेकर आया है तो सेठ ने आनन्द के साथ उसका स्वागत किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ रहने लगा। इसी प्रकार से जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस कथा को पढ़ता और सुनता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।



सौम्य प्रदोष व्रत कथा

पूर्वकाल में एक ब्राह्मणी अपने पति की मृत्यु के पश्चात् निराधार होकर भिक्षा मांगने लग गई। वह प्रातः होते ही अपने पुत्र को साथ लेकर बाहर निकल जाती और संध्या होने पर घर वापिस लौटती। एक समय उसको विदर्भ देश का राजकुमार मिला जिसके पिता को शत्रुओं ने मारकर राज्य से बाहर निकाल दिया था। इस कारण वह मारा-मारा फिरता था। ब्राह्मणी उसे अपने साथ घर ले गई और उसका पालन पोषण करने लगी। एक दिन उन दोनों बालकों ने वन में खेलते-खेलते गन्धर्व कन्याओं को देखा। ब्राह्मण का बालक तो अपने घर आ गया परन्तु राजकुमार साथ नहीं आया क्योंकि वह अंशुमती नाम की गन्धर्व कन्या से बातें करने लगा था दूसरे दिन वह फिर अपने घर से आया वहां पर अंशुमति अपने माता-पिता के साथ बैठी थी। उधर ब्राह्मणी ऋषियों की आज्ञा से प्रदोष का व्रत करती थी। कुछ दिन पश्चात् अंशुमति के माता-पिता ने राजकुमार से कहा कि

तुम विदर्भ देश के राजकुमार धर्मगुप्त हो, हम श्री शंकर जी की आज्ञा से अपनी पुत्री अंशुमति का विवाह तुम्हारे साथ कर देते हैं। फिर राजकुमार का विवाह अंशुमति के साथ हो गया। बाद में राजकुमार ने गन्धर्वराज की सेना की सहायता से विदर्भ देश पर अधिकार कर लिया और ब्राह्मण के पुत्र को अपना मंत्री बना लिया। यथार्थ में यह सब उस ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत करने का फल था। बस उसी समय से यह प्रदोष व्रत संसार में प्रतिष्ठित हुआ।

सोलह सोमवार व्रत कथा

मृत्यु लोक में विवाह करने की इच्छा करके एक समय श्री भूतनाथ महादेव जी माता पार्वती के साथ पधारे। वहां वे भ्रमण करते-करते विदर्भ देशांतर्गत अमरावती नाम की अति रमणीक नगरी में पहुंचे। अमरावती नगरी अमरापुरी के सदृश सब प्रकार के सुखों से परिपूर्ण थी। उसमें वहां के महाराज का बनाया हुआ अति रमणीक शिवजी का मन्दिर था। उसमें भगवान् शंकर भगवती पार्वती के साथ निवास करने लगे। एक समय माता पार्वती

ने प्राणपति को प्रसन्न देख के मनोविनोद करने की इच्छा से बोलीं— "हे महाराज! आज तो हम तुम दोनों चौसर खेलें। शिवजी ने प्राणप्रिया की बात को मान लिया और चौसर खेलने लगे। उस समय इस स्थान पर मन्दिर का पुजारी ब्राह्मण मन्दिर में पूजा करने को आया। माताजी ने ब्राह्मण से प्रश्न किया कि पुजारी जी बताओ कि इस बाजी में दोनों में किसकी जीत होगी। ब्राह्मण बिना विचारे ही शीघ्र बोल उठा कि महादेवजी की जीत होगी। थोड़ी देर में बाजी समाप्त हो गई और पार्वती जी की विजय हुई। अब तो पार्वती जी ब्राह्मण को झूठ बोलने के अपराध के कारण श्राप देने को उद्यत हुई। तब महादेव जी ने पार्वती जी को बहुत समझाया परन्तु उन्होंने ब्राह्मण को कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। कुछ समय बाद पार्वती जी के श्रापवश पुजारी के शरीर में कोढ़ पैदा हो गया। इस प्रकार पुजारी अनेक प्रकार से दुखी रहने लगा। इस तरह के कष्ट भोगते हुए जब बहुत दिन हो गये तो देवलोक की अप्सरायें शिवजी की पूजा करने उसी मन्दिर में पधारी और पुजारी के कष्ट को देख बड़े दयाभाव से उससे रोगी होने का कारण पूछने लगीं— "पुजारी ने निःसंकोच सब बातें

उनसे कह दी।" वे अप्सरायें बोलीं— "हे पुजारी! अब तुम अधिक दुखी मत होना। भगवान् शिवजी तुम्हारे कष्ट को दूर कर देंगे। तुम सब बातों में श्रेष्ठ षोडश सोमवार का व्रत भक्तिभाव से करो। तब पुजारी अप्सराओ से हाथ जोड़कर विनम्र भाव से षोडश सोमवार व्रत की विधि पूछने लगा। अप्सरायें बोलीं कि जिस दिन सोमवार हो उस दिन भक्ति के साथ व्रत करें, स्वच्छ वस्त्र पहनें, आधा सेर गेहूँ का आटा ले उसके तीन अंगा बनावे और घी, गुड़, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, बेलपत्र, जनेऊ जोड़ा, चन्दन, अक्षत, पुष्पादि के द्वारा प्रदोष काल में भगवान् शंकर का विधि से पूजन करे तत्पश्चात् अंगाओं में से एक शिवजी को अर्पण करें बाकी दो को शिवजी का प्रसाद समझकर उपस्थित जनों में बांट दें और आप भी प्रसाद पावें। इस विधि से सोलह सोमवार व्रत करें। तत्पश्चात् सत्रहवें सोमवार के दिन पाव सेर पवित्र गेहूँ के आटे की बाटी बनावें। तदनुसार घी और गुड़ मिलाकर चूरमा बनावें और शिवजी का भोग लगाकर उपस्थित भक्तों में लः पीछे आप सकुटुम्ब प्रसाद लें तो भगवान् शिवजी की कृपा से उसके मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं। ऐसा कहकर अप्सरायें स्वर्ग

यह कैसे हो सकेगा ? अंत में राजा ने उसे अपने यहां से निकाल दिया । रानी दुःखी हृदय से भाग्य को कोसती हुई नगर के बाहर हुई । बिना पदत्राण फटे वस्त्र पहने भूख से दुखी धीरे-धीरे चलकर एक नगर में पहुंची । वहां एक बुढ़िया सूत कातकर बेचने को जाती थी । रानी की करुण दशा देख बोली चल तू मेरा सूत बिकवा दे । मैं वृद्ध हूँ, भाव नहीं जानती हूँ । ऐसी बात बुढ़िया की सुन रानी ने बुढ़िया के सर से सूत की गठरी उतार अपने सर पर रखी, थोड़ी देर बाद आंधी आई और बुढ़िया का सूत पोटली के सहित उड़ गया । बेचारी बुढ़िया पछताती रह गई और रानी को अपने साथ से दूर रहने को कह दिया । अब रानी एक तेली के घर गई, तो तेली के सब मटके शिवजी के प्रकोप के कारण चटक गए । ऐसी दशा देख तेली ने रानी को अपने घर से निकाल दिया । इस प्रकार रानी अत्यंत दुख पाती हुई सरिता के तट पर गई तो सरिता का समस्त जल सूख गया । तत्पश्चात् रानी एक वन में गई, वहां जाकर सरोवर में सीढ़ी से उतर पानी पीने को गई । उसके हाथ से जल स्पर्श होते ही सरोवर का नीलकमल के सदृश्य जल असंख्य कीड़ोंमय गंदा हो गया । रानी ने भाग्य पर दोषारोपण करते हुए उस

जल को पान करके पेड़ की शीतल छाया में विश्राम करना चाहा । वह रानी जिस पेड़ के नीचे जाती उस पेड़ के पत्ते तत्काल ही गिरते गये । वन, सरोवर जल की ऐसी दशा देखकर गरु चराते ग्वालों ने अपने गुसाईं जी से जो उस जंगल में स्थित मंदिर में पुजारी थे कही । गुसाईं जी के आदेशानुसार ग्वाले रानी को पकड़कर गुसाईं के पास ले गये । रानी की मुख कांति और शरीर शोभा देख गुसाईं जान गए । यह अवश्य ही कोई विधि की गति की मारी कोई कुलीन अबला है । ऐसा सोच पुजारी जी ने रानी के प्रति कहा कि पुत्री मैं तुमको पुत्री के समान रखूंगा । तुम मेरे आश्रम में ही रहो । मैं तुम को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने दूंगा । गुसाईं के ऐसे वचन सुन रानी को धीरज हुआ और आश्रम में रहने लगी । परन्तु आश्रम में रानी जो भोजन बनाती उसमें कीड़े पड़ जाते, जल भरके लावे उसमें कीड़े पड़ जाते । अब तो गुसाईं जी भी दुःखी हुए और रानी से बोले कि हे बेटी ! तेरे पर कौन से देवता का कोप है, जिससे तेरी ऐसी दशा है ? पुजारी की बात सुन रानी ने शिवजी की पूजा करने न जाने की कथा सुनाई तो पुजारी ने शिवजी महाराज की अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए रानी के

सोमवार की आरती

जय शिव ओंकारा जय शिव ओंकारा । ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥ टेक ॥
 एकानन चतुरानन पंचानन राजै । हंसानन गुरुडासन वृषवाहन साजै ॥ जय ॥
 दो भुज चारु चतुर्भुज दसभुज अति सोहे । तीनों रूप निखरते त्रिभुवन जन मोहे ॥ जय ॥
 जय माला वन माला मुण्ड माला धारी । त्रिपुरारी कंसारी वर माला धारी ॥ जय ॥
 श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे । सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥ जय ॥
 कर में श्रेष्ठ कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता । जग-कर्ता जग-हर्ता जग पालन कर्ता ॥ जय ॥
 ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका ॥ जय ॥
 त्रिगुण स्वामीजी की आरती जो कोई नर गावे । कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पावे ॥



मंगलवार व्रत की विधि

सर्व सुख, रक्त विकार, राज्य सम्मान तथा पुत्र की प्राप्ति के लिये मंगलवार का व्रत उत्तम है। इस व्रत में गेहूँ और गुड़ का ही भोजन करना चाहिए। भोजन दिन रात में एक बार ही ग्रहण करना ठीक है। व्रत २१ सप्ताह तक करें। मंगलवार के व्रत से मनुष्य के समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। व्रत के पूजन के समय लाल पुष्पों को चढ़ावें और लाल वस्त्र धारण करें। अन्त में हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए तथा मंगलवार की कथा सुननी चाहिए।

मंगलवार व्रत कथा

एक ब्राह्मण दम्पति के कोई सन्तान न हुई थी, जिसके कारण पति-पत्नी दुःखी थे। वह ब्राह्मण हनुमान जी की पूजा हेतु वन में चला गया। वह पूजा के साथ महावीर जी से एक पुत्र की कामना प्रकट किया करता था। घर पर उसकी पत्नी मंगलवार व्रत पुत्र की

प्राप्ति के लिए किया करती थी। मंगल के दिन व्रत के अंत भोजन बनाकर हनुमान जी को भोग लगाने के बाद स्वयं भोजन ग्रहण करती थी। एक बार कोई व्रत आ गया। जिसके कारण ब्राह्मणी भोजन न बना सकी तब हनुमान जी का भोग भी नहीं लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मंगलवार को हनुमान जी को भोग लगाकर अन्न ग्रहण करूंगी। वह भूखी प्यासी छः दिन पड़ी रही। मंगलवार के दिन तो उसे मूर्छा आ गई। तब हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गये। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहा — “मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ। मैं तुझको एक सुन्दर बालक देता हूँ। जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।” हनुमान जी मंगलवार को बाल रूप में उसको दर्शन देकर अंतर्धान हो गए। सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण वन से लौटकर आया। प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक घर में क्रीड़ा करते देखकर वह ब्राह्मण पत्नी से बोला — “यह बालक कौन है?”

पत्नी ने कहा—“मंगलवार के व्रत से प्रसन्न होकर हनुमान जी ने दर्शन दे मुझे बालक दिया है। पत्नी की बात छल से भरी जान उसने सोचा यह कुल्टा व्याभिचारिणी अपनी कलुषता छुपाने के लिए बात बना रही है। एक दिन उसका पति कुएँ पर पानी भरने चला तो पत्नी ने कहा कि मंगल को भी साथ ले जाओ। वह मंगल को साथ ले चला और उसको कुएँ में डालकर वापिस पानी भरकर घर आया तो पत्नी ने पूछा कि मंगल कहां है? तभी मंगल मुस्कराता हुआ घर आ गया। उसको देख ब्राह्मण आश्चर्य चकित हुआ। रात्रि में उसके पति से हनुमान जी ने स्वप्न में कहा—“यह बालक मैंने दिया है तुम पत्नी को कुल्टा क्यों कहते हो। पति यह जानकर हर्षित हुआ। फिर पति-पत्नी मंगल का व्रत रख अपना जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करने लगे। जो मनुष्य मंगलवार व्रत कथा को पढ़ता या सुनता है और नियम से व्रत रखता है। उसके हनुमान जी की कृपा से सब कष्ट दूर होकर सर्व सुख प्राप्त होता है।

मंगलवार तथा मंगलिया की कथा

एक बुढ़िया थी, वह मंगल देवता को अपना इष्ट देवता मानकर सदैव मंगल का व्रत रखती और मंगलदेव का पूजन किया करती थी। उसका एक पुत्र था जो मंगलवार को उत्पन्न हुआ था। इस कारण उसको मंगलिया के नाम से बोला करती थी। मंगलवार के दिन न तो घर को लीपती और न ही पृथ्वी खोदा करती थी। एक दिन मंगल देवता उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिये उसके घर में साधु का रूप बनाकर आये और द्वार पर आवाज दी। बुढ़िया ने कहा महाराज क्या आज्ञा है? साधु कहने लगा कि बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा। यह सुनकर बुढ़िया ने कहा महाराज आज मंगलवार की व्रती हूँ इसलिये मैं चौका नहीं लगा सकती। कहो तो जल का छिड़काव कर दूँ। उस पर भोजन बना लें। साधु कहने लगा कि मैं गोबर से ही

मंगलवार की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥
 जाके बल से गिरवर कांपे। रोग दोष जाके निकट न झांके ॥
 अंजनी पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई ॥
 दे वीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये ॥
 लंका ऐसे कोट समुद्र अस खाई। जात पवनसुत बार न लाई ॥
 लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज संवारे ॥
 लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। लाये संजीवन प्राण उबारे ॥
 पैठि पाताल तोरि जम कारे। अहिरावण की भुजा उखारे ॥
 बाएं भुजा असुर संहारे। दाहिने भुजा संत जन तारे ॥
 सुर नर मुनि जन आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें ॥
 कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई ॥
 जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै ॥



❦❦ बुधवार व्रत की विधि ❦❦

ग्रह शान्ति तथा सर्व-सुखों की इच्छा रखने वालों को बुधवार का व्रत करना चाहिए। इस व्रत में रात दिन में एक ही बार भोजन करना चाहिए। इस व्रत के समय हरी वस्तुओं का उपयोग करना श्रेष्ठ है। व्रत के अंत में शंकर जी की पूजा, धूप, बेल-पत्र आदि से करनी चाहिए। साथ ही बुधवार की कथा सुनकर आरती के बाद प्रसाद लेकर जाना चाहिए। बीच में ही नहीं जाना चाहिए।

❦❦ बुधवार व्रत कथा ❦❦

एक समय एक व्यक्ति अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। वहाँ पर कुछ दिन रहने के पश्चात् सास-ससुर से विदा करने के लिये कहा। किन्तु सबने कहा कि आज बुधवार का दिन है आज के दिन गमन नहीं करते हैं। वह व्यक्ति किसी प्रकार न माना और हठधर्मी करके बुधवार के दिन ही पत्नी को विदा कराकर अपने नगर को चल पड़ा। राह में उसकी पत्नी को प्यास लगी तो उसने अपने पति से कहा कि मुझे बहुत जोर से प्यास लगी

है। तब वह व्यक्ति लोटा लेकर रथ से उतरकर जल लेने चला गया। जैसे ही वह व्यक्ति पानी लेकर अपनी पत्नी के निकट आया तो वह यह देखकर आश्चर्य से चकित रह गया कि ठीक अपनी ही जैसी सूरत तथा वैसी ही वेश-भूषा में वह व्यक्ति उसकी पत्नी के पास रथ में बैठा हुआ है। उसने क्रोध से कहा कि तू कौन है जो मेरी पत्नी के निकट बैठा हुआ है। दूसरा व्यक्ति बोला यह मेरी पत्नी है। मैं अभी-अभी ससुराल से विदा कराकर ला रहा हूँ। वे दोनों व्यक्ति परस्पर झगड़ने लगे। तभी राज्य के सिपाही आकर लोटे वाले व्यक्ति को पकड़ने लगे। स्त्री से पूछा, तुम्हारा असली पति कौन-सा है? तब पत्नी शांत ही रही क्योंकि दोनों एक जैसे थे वह किसे अपना असली पति कहे। वह व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता हुआ बोला— हे परमेश्वर यह क्या लीला है कि सच्चा झूठा बन रहा है। तभी आकाशवाणी हुई कि मूर्ख आज बुधवार के दिन तुझे गमन नहीं करना था। तूने किसी की बात नहीं मानी। यह सब लीला बुधदेव भगवान् की है। उस व्यक्ति ने बुधदेव से प्रार्थना की और अपनी गलती के लिये क्षमा मांगी। तब बुधदेव जी अन्तर्धान हो गए। वह अपनी स्त्री को लेकर घर आया तथा बुधवार का व्रत वे दोनों पति-

